ISSN-2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume-XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की समस्याएँ

*** प्रो.(डॉ.) भारत श्रीमंत खिलारे**

* *अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर अध्यापक एवं शोध निर्देशक, यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय,पाचवड, ता.वाई, , जि. सातारा. 415513*

शोध सार :

किसी एक भाषा की सामाग्री का दूसरी भाषा में रूपांतर करने को 'अनुवाद' कहते है। संभवत मानव जन्म के साथ ही अनुवाद का जन्म हुआ। मनुष्य की भावनाओं की अभिव्यक्ति की अकुलाहट ने ही अनुवाद को जन्म दिया। प्रस्तुत शोध पत्र में जहां अनुवाद के अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप तथा विभिन्न समस्याओं का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। आज अनुवाद प्रयोजन की दृष्टि से बहुमुखी और बहुआयामी बन चुका है। अनुवाद अन्य भाषा और मानव समुदाय में विकसित ज्ञान–विज्ञान के आयात का माध्यम बन गया है। यह आज देश–विदेश के राजनीतिक जीवन की अनिवार्यता भी बन गया है। अनुवाद का भारत जैसे देश में बहुत ही महत्व है है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं कुछ बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। अनुवाद की समस्याओं पर चर्चा करना प्रस्तुत शोध पत्र का प्रमुख प्रयोजन है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

प्रस्तावना :

भाषा का अनुवाद से महत्वपूर्ण संबंध है। यानि मूल भाषा या स्त्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा में रूपांतर करना ही अनुवाद है। अनुवाद कला का प्रारंभ किस काल से हुआ, यह कोई नहीं कह सकता है, किंतु अनुवाद का मौखिक रूप बहुत पुराना है। संस्कृत साहित्य में अनुवाद का प्रयोग मिलता है। वेद, पुराण आदि में अनुवाद शब्द का प्रयोग के अर्थ में मिलता है। पुनः कथन यानि पहले कही गई बात को फिर से कहना। अनुवाद में हम एक भाषा में कही गई बात को उसके कहे जाने के बाद भाषा में कहते है। इसी प्रकार लिखित अनुवाद में एक भाषा में लिखी गई रचना को अन्य भाषा में फिर से लिखित या रूपांतर करने को अनुवाद कहा जाता है। एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद का कार्य है। भाषा के दो रूप हमारे सामने हैं– मौखिक रूप और लिखित रूप। आमतौर पर अनुवाद की आवश्यकता मौखिक भाषा में रहती है जबकि लिपिबध्द भाषा में अनुवाद की आवश्यकता और भी अधिक हो जाती है। अनुवाद लिपिबध्द हो या मौखिक, वक्ता और श्रोता के बीच में अथवा लेखक और पाठक के बीच में एक मध्यस्थ की आवश्यकता रहती है। जिसे हम दुभाषिया या अनुवादक कहते है। अतः यह तो स्पष्ट है कि जिस भाषा में अनुवाद अपेक्षित है उसे हम मूल या श्रोत भाषा कहते है तथा जिसमें अनुवाद किया जाता है. उसे लक्ष्य भाषा कहते है। इससे प्रतीत

होता है कि अनुवाद प्रक्रिया में भाषा का विशेष महत्व होता है।

शोध प्रविधि :

प्रस्तुत शोध पत्र अनुवाद प्रक्रिया के स्वरूप, विभिन्न समस्याओं जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डालता है। शोध पत्र के प्रथम चरण में अनुवाद के अर्थ, परिभाषा तथा पूर्वपीठिका आदि को दर्शाया गया है। दूसरे चरण में अनुवाद के क्षेत्र में आ ही रही विभिन्न प्रकार की व्यावहारिक समस्याओं चित्रण किया गया गया है जबकि तीसरे चरण में अनुवाद की आवश्यकता, क्षेत्र एवं संभावनाएं उल्लिखित हैं। उक्त शोध पत्र में सर्वेक्षण विधि को अपना कर सामग्री एकत्रित की गई है।

अनुवाद : अर्थ एवं स्वरूप :

अनुवाद शब्द 'अनु' उपसर्ग तथा 'वाद' शब्द के संयोग से बना है – अनु + वाद = अनुवाद। 'अनु' उपसर्ग का अर्थ होता है पीछे या अनुगमन करना तथा 'वाद' शब्द का संबंध है 'वद्' धातु से, जिसका अर्थ होता है कहना या बोलना। इस प्रकार अनुवादक शब्द का शाब्दिक अर्थ होगा किसी के कहने या बोलने के बाद बोलना। पाणिनी ने अपनी अश्टाध्यायी में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग किसी ज्ञात बात को कहने के संदर्भ में किया है– 'अनुवाड़े चरणानाम्''। जैमिनिय न्यायमाला में भी अनुवाद को ज्ञात का पुनर्कथन ही माना गया है– ''ज्ञातस्य कथनमनुवादः''। इस प्रकार कहा जा सकता है कि अनुवाद में हम एक भाषा में कही गई बात को उसके कहे जाने के बाद दूसरी भाषा में कहते है। एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना अनुवाद का कार्य है।

आज अनुवाद एक स्वतंत्र विषय एवं महत्वपूर्ण विधा के रूप में न केवल अपना विशेष स्थान बना चुका है बल्कि उसका व्यवस्थित ढंग से उत्तरोतर विकास भी होता जा रहा है। किसी भी देश–समाज की साहित्यिक और सांस्कृतिक उत्कृष्टता का दर्पण मौलिक सृजन के समान अनुवाद भी होता है। विश्व सभ्यता के विकास में अनुवाद की सराहनीय भूमिका रही है। यह भूमिका साहित्य, विज्ञान एवं प्राद्यौगिकी के क्षेत्र तक ही नहीं, अपितु सामाजिक–सांस्कृतिक और आँय कई संदर्भों में भी सराहनीय रही है, क्योंकि अनुवाद ही वह एकमात्र माध्यम है जिसकी सहायता से विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृतियों, धर्मों एवं सामाजिक स्तरों से देश–विदेश में संवाद स्थापित हो पाता है।

आज के इस वैज्ञानिक युग में, विज्ञान के क्षेत्र में अनेकानेक भाषाओं में जो निरंतर चिंतन–मनन, अध्ययन–अनुसंधान और लेखन कार्य हो रहा है। उसे अन्य भाषा–भाषियों तक पहुँचाने के लिए भिन्न–भिन्न भाषाओं में उसके अनुवाद की आवश्यकता होती है क्योंकि संपूर्ण विश्व में ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में हो रही संवृध्दी और अद्दतन जानकारी आदि को अन्य भाषाओं में 'अनुवाद' के माध्यम से जाना जा सकता है। इसी प्रकार कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक आदि सृजनात्मक साहित्य की देश अथवा समाज विशेष की सांस्कृतिक संपदा का बोध हमें तब तक नहीं

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

हो पाता जब तक कि उन समस्त श्रेष्ठ कृतियों का अपनी भाषा में अनुवाद न उपलब्ध हो । वैसे एक ही देश कि भौगोलिक सीमा के भीतर कई स्वीकृत व्यावहारिक भाषाओं के कारण भी अनुवाद की आवश्यकता दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। इस प्रकार अनुवाद की मूल चेतना के परिप्रेक्ष्य में देंखे तो अनुवाद विभिन्न भाषा–भाषियों के बीच परस्पर विचार–विनिमय का 'माध्यम' है, दो भाषा के बीच 'सेतु' है।

अनुवाद की परिभाषाएँ :

अनुवाद की परिभाषाओं के रूप में प्राचीन भारतीय ग्रंथों में अनुवाद को भले ही परिभाषित नहीं किया गया है, परंतु परोक्ष रूप से इस संबंध में बहुत कुछ बताया गया है।

परिभाषा की दृष्टि से आधुनिक लेखकों व विचारकों ने अनुवाद की विभिन्न परिभाषाएँ दी हैं। भारतीय विचारकों की परिभाषाएँ निम्नवत् हैं :

(1) डॉ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन।"[1] अनुवाद विज्ञान, पृ.16

(2) "अनुवाद वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव को एक भाषा समुदाय से दूसरे भाषा समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।" –पटनायक

(3) "समस्त अभिव्यक्ति अनुवाद है क्योंकि वह अव्यक्त (या अदृश्य आदि) को भाषा (या रेखा या रंग) में प्रस्तुत करती है।"[2]– स. ही. वात्स्यायन, अनुवाद : कला और समस्याएँ, 1961, पृ. 4

मेरे विचार से अनुवाद की सरलतम परिभाषा निम्नवत् हो सकती है :

(4) स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी विषयवस्तु या संदेश की समतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।

(5) भाषा भेद के विशिष्ट पाठ को दूसरी भाषा में इस प्रकार प्रस्तुत करना अनुवाद है जिसमें वह मूल के भाषिक अर्थ, प्रयोग के वैशिष्ट्य को यथासंभव संरक्षित रखते हुए दूसरी भाषा के पाठक को स्वाभाविक रूप से ग्राह्य प्रतीत हो।[3]

– डॉ. सुरेश कुमार : अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा

पाश्चात्य विचारकों ने अनुवाद को इस प्रकार परिभाषित किया है :

(6) अनुवाद एक संबंध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है, ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य संपादित करते हैं। हैलिडे[4] 1964 : 124

(7) एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा में समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है। – कैटफोर्ड

The replacement textual material in one language by equivalent textual matereal in another language – Catford.

(8) मूल भाषा के संदेश के सममूल्य संदेश को लक्ष्यभाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद कहते हैं। संदेशों की यह मूल्य समता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से तथा निकटतम एवं स्वाभाविक होती है।[5] नाइडा एवं टेबर (1961:12)

Translation consis in producing in the receptor language the closest natural equiralent to the message of the source language, first in meaning and Secondly in style. Naida & Tabar (1961:12)

(9) किसी एक भाषा के पाठ की विषयवस्तु को दूसरी भाषा के पाठ में अंतरित करना अनुवाद है। –फारेस्टेन

अनुवाद की समस्याएँ :

अनुवाद बहुत सरल प्रतीत होने वाली क्रिया है परंतु वास्तविकता यह है कि अनुवाद अत्यधिक जटिल प्रक्रिया है। अनुवाद में जब हम व्यवहार की ओर उन्मुख होते हैं तब हमारा पाला विभिन्न प्रकार की समस्याओं से पड़ता है। अतः अच्छे अनुवादक के लिए यह नितांत जरूरी हो जाता है कि वह इन समस्याओं से परिचित हो जाए व इनके निराकरण का प्रयास करे। अनुवाद में आने वाली समस्याएँ अनुवादक की क्षमता पर भी निर्भर होती हैं। यदि अनुवादक को लक्ष्य भाषा, स्त्रोत भाषा और विषय पर अधिकार नहीं होगा तो उसकी समस्याएँ बढ़ती ही जाएँगी व हर कदम पर उसे कठिनाई का सामना करना पड़ेगा। लेकिन स्त्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा और विषय का ज्ञान रखने पर भी अनुवाद में समस्याएँ आती ही हैं। अनुवाद में आनेवाली समस्याएँ तो अनेक हैं लेकिन हम यहाँ प्रमुख समस्याओं पर ही चर्चा करेंगे :

1. **व्याकरण संबंधी समस्याएँ** : प्रत्येक भाषा का अपना व्याकरण होता है व प्रत्येक भाषा व्याकरण के नियमों से नियंत्रित होती है। अतः लक्ष्य भाषा और स्त्रोत भाषा दोनों में ही व्याकरण कोटियाँ भिन्न होती हैं। वाक्य रचना व वचन प्रक्रिया लिंगविधान भिन्न होते हैं, उदाहरण के लिए He goat एवं she goat का वह बकरा, वह बकरी अनुवाद करना त्रुटिपूर्ण होगा क्योंकि अंग्रेजी का लिंग विधान सीमित है। इसलिए He और She का प्रयोग किया गया है। इसी प्रकार He is my father का अनुवाद वह मेरा पिता है करना तर्कसंगत नहीं है, हमें कहना होगा–वे मेरे पिता जी हैं। हिंदी में 'जी' अतिरिक्त प्रयोग है और 'हैं' का प्रयोग सम्मान देने के लिए किया है। अंग्रेजी का वाक्य एकवचन में होते हुए भी इसका अनुवाद बहुवचन में हुआ है। इसलिए यह नितांत जरूरी है कि व्याकरण, रचना प्रक्रिया और भाषागत विशेषताओं/भिन्नताओं को समझकर अनुवाद किया जाए।[6]

2. **भाषागत प्रयुक्तियाँ** : प्रत्येक भाषा के प्रयोग के अपने नियम होते हैं अतः एक भाषा में जो अनिवार्य होता है दूसरी भाषा में वह अर्थहीन हो जाता है। यदि हम अंग्रेजी में कहें–There are five birds on the tree. इसका हिंदी में शाब्दिक अनुवाद होगा। वहाँ पेड़ के ऊपर पाँच चिड़ियाँ हैं। परंतु सही अनुवाद होगा, पेड़

पर पाँच चिड़ियाँ हैं। यहाँ हम देखते हैं कि There तथा The का अनुवाद नहीं किया गया है। इस प्रकार हमें भाषा की प्रकृति एवं उसके प्रयोग को भी सदैव ध्यान में रखकर अनुवाद करना चाहिए। अन्यथा यह विकट समस्या बन जाती है।

3. **संकल्पनाओं संबंधी समस्याएँ** : भाषा निरंतर प्रवाहमान एवं गतिशील रहती है। नई–नई खोजों, नए–नए प्रयोगों और संकल्पनाओं का भाषा में निरंतर प्रयोग होता ही रहता है। ऐसी संकल्पनाएँ अनुवादकों के लिए बहुत समस्याएँ पैदा करती हैं। यदि आप बैंकिंग में अनुवाद कर रहे हों, और आपके पास शब्द आया Factoring आपने इसका अनुवाद फैक्ट्री के अर्थ में कर दिया तो अर्थ का अनर्थ हो जाएगा। इसलिए जिस विषय का अनुवाद कर रहे हों उस विषय के पारिभाषिक कोश का अवश्य सहारा लें या फिर संकल्पनाओं का लिप्यंतरण कर दें। हास्यास्पद अनुवाद कभी न करें। यदि कोई अभिव्यक्ति समझ में न आए तो विषय के विशेषज्ञ से संपर्क करें।[7]

4.**शब्द चयन संबंधी समस्याएँ** : अनुवाद में शब्द चयन की समस्या सबसे महत्त्वपूर्ण है। यदि आप विषय को समझने में थोड़ी सी लापरवाही बरत दें या शब्दकोश देखकर सीधा–सीधा अनुवाद कर दें तब भी बहुत सी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं। मैंने अभी हाल ही में एक बैंक की रबर मुहर का अनुवाद देखा था जो मात्र उचित शब्द चयन की अक्षमता के कारण हुआ था–मुहर थी–Please pay/deliver to the order of – इसका अनुवाद इस प्रकार था–को या उनके आदेश पर 'प्रसव' करें। प्रसव यानी बच्चे को जन्म देना। यह तो ईश्वर के आदेश पर ही संभव है। बैंक की मुहर से प्रसव नहीं कराया जा सकता। वस्तुतः शब्दकोश में डिलिवर का अर्थ था–प्रसव, सुपुर्दगी, व्याख्यान देना आदि इस मुहर में डिलिवर का आशय था सुपुर्द करना, लेकिन अनुवादक ने बिना यह सोचे कि इस मुहर का उद्देश्य क्या है, उक्त शब्द लिया और अनुवाद कर दिया। अतः उचित शब्द चयन नहीं हो पाया है। इसी प्रकार एक ही शब्द के अनेक अर्थ होते हैं। किस समय कौन से शब्द का उपयोग किया जाए यह जानना अनुवादक का पहला धर्म है।

5.**शब्द शक्तियाँ व लक्षणामूलक प्रयोग** : अनुवाद की एक समस्या यह भी होती है कि कभी–कभी शब्दों का सीधा अर्थ नहीं निकलता है बल्कि उनके लक्षणा या व्यंजना–मूलक अर्थ होते हैं, कहीं–कहीं पर व्यंग्य होते हैं। मूल पाठ में ऐसे लक्षणा या व्यंजना–मूलक शब्दों या व्यंग्य अथवा व्यंग्यात्मक शैली की पहचान कर लेनी चाहिए उसके उपरांत शब्द को दृष्टि में न रखकर अभिव्यक्ति का अनुवाद किया जाता है।

6.**साहित्यिक विधाओं के अनुवाद की समस्याए** : साहित्य, भावना की सुव्यवस्थित अभिव्यक्ति होती है। इस अभिव्यक्ति हेतु

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

साहित्यकार जिन माध्यमों का उपयोग करते हैं, वे साहित्य की विधाएँ कहलाती हैं, जैसे–कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक, रिपोर्ताज, चंपू आदि। साहित्य के अनुवाद में सबसे बड़ी कठिनाई यह होती है कि यह भावना प्रधान होता है, अतः कथ्य में वर्णित कोमलता को उसी रूप और उठी कोमलता से दूसरी भाषा में ले जाना वस्तुतः एक जटिल कार्य है। काव्य की कल्पना शक्ति व उसकी अनेकार्थता को उसी रूप में अनुवाद करना दुष्कर कार्य है। बिहारी के दोहे जो कई–कई अर्थ देते हैं व उनकी श्लेषपरक उक्तियों को उसी गहराई से दूसरी भाषा में पहुँचा सकता है। हिंदी काव्य की आनुप्रासिकता को कैसे सहेजा जाएगा–भावना की सूक्ष्मतम गहराइयों को कैसे पाटा जाएगा? काकु वक्रोक्ति, बिंबविधान, अलंकार, उपमेय और उपमानों को कैसे व्यक्त किया जाए। भारतीय जनमानस उल्लू को मूर्ख और अशुभ समझता है जबकि विदेशी संस्कृति (विशेषतः ब्रिटेन के अंग्रेज) में इसे शुभ मानते हैं, इस प्रकार के अंतर्विरोधों के बावजूद यही अभिव्यक्तियाँ कैसे व्यक्त की जाएँ, यह समस्या सदैव अनुवादकों को परेशान करती आई हैं। परंतु इसका भी हल है। निश्चित समाधान है। इसके लिए हम जिस लक्ष्य भाषा में अनुवाद कर रहे हैं उसके उपमेय और उपमानों का प्रयोग करें, मंदिर की जगह चर्च ले जाएँ और दीप की जगह मोमबत्ती अर्थात् भाषा के सांस्कृतिक सामाजिक परिवेश को देखकर ही अनुवाद करें तो साहित्य का अनुवाद अधिक रुचिकर होगा साहित्यिक अनुवाद हू–ब–हू न होकर रूपांतरण (Adoption) शैली में होना चाहिए। सौंदर्य प्रतिमान एवं बिंब विधान की लक्ष्य भाषा के अनुरूप बदल दिए जाने चाहिए। पात्रों के नाम भी देश, काल के अनुरूप बदल देने चाहिए।

7. **पौराणिक प्रतीक** : अनुवाद की एक समस्या यह भी होती है कि पौराणिक प्रतीकों, दंत कथाओं आदि के संदर्भ आने पर उन शब्दों को कैसे व्यक्त किया जाए जैसे भीष्म प्रतिज्ञा, विभीषण आदि के पीछे जो तथ्य और प्रतीकात्मकता छिपी होती है उसे अनुवाद के द्वारा व्यक्त करना कठिन कार्य है, परंतु इसी प्रकृति के पात्रों के गुण के समान यदि लक्ष्य भाषा में कोई पात्र हो तो उनका उल्लेख करना चाहिए अथवा जिस प्रतीक के लिए इनका उपयोग हुआ है उस प्रतीक की व्याख्या करके अनुवाद संपन्न करना चाहिए

निष्कर्ष :

अतः हम यह कह सकते है कि अनुवाद मात्र एक साहित्यिक कार्य नहीं है, अपितु उसकी पहचान जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिय साधन के रूप में उभरी है। प्रशासन, चिकित्सा, कला, संस्कृति, विज्ञान, विधि, प्रौद्योगिकी, तकनीकी अनुसंधान, व्यवसाय, पत्रकारिता, जनसंचार, आदि विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के बिना कुछ नहीं हो सकता। भारत जैसे बहुभाषी और विविधताओं से भरे देश में राष्ट्रिय एकता के सूत्रों को समेटने में भी

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS Original Research Article

अनुवाद की अपनी विशिष्ट भूमिका है। इसी तरह साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन और अनुसंधान की विभिन्न दिशाएँ अनुवाद से ही नियंत्रित होती है। अनुवाद एक स्वतंत्र व्यवसाय एवं आजीविका का साधन बन गया है। ज्ञान–विज्ञान, आद्योगिक विकास और वाणिज्य–व्यवसाय के विभिन्न क्षेत्रों में अनुवाद के व्यापक उपयोग ने इसे अधिकाधिक लोकप्रिय बनाया है। बहुभाषी देश भारत में बहुभाषी शिक्षा प्रणाली की संभावनाओं के साथ भी अनुवाद का गहरा रिश्ता है। अनुवाद आज की आवश्यकता है और भविष्य की अपरिहार्यता के रूप में अनुवाद की संभावनाएं असीम है।

संदर्भ संकेत :

1. *अनुवाद विज्ञान : पृ. 16*
2. *वात्स्यायन स.ही. : अनुवाद कला और समस्याएँ, सरस्वती प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1961, पृ.4*
3. *डॉ.सुरेशकुमार : अनुवाद सिद्धांत की रुपरेखा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1968, पृ. 40*
4. *हैलिडे : अनुवाद कला, कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं.1964, पृ.124*
5. *नाईडा एवं टेबर : अनुवाद परिचय, पंचवटी प्रकाशन, ओडिसा, प्र.सं.1961, पृ.12*
6. *डॉ.नौटियाल जयंती प्रसाद : अनुवाद सिद्धांत एवं व्यवहार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र.सं.2000, पृ.51*
7. *वही – पृ. 52*

Cite This Article:

प्रो.(डॉ.) भा. श्री. खिलारे (2025). *अनुवाद की समस्याएँ.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 8–14). **Doi:** https://doi.org/10.5281/zenodo.18006328